nbt.india
एक: सूते सकलम्

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद

मूल्य : एक प्रति ₹ 0.50; वार्षिक ₹ 5.00

अप्रैल 2015 • वर्ष 20, अंक 4

अंदर के पृष्ठों में . . . . .

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस	2
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के लेखकों को पद्म सम्मान	2
इंडिया पब्लिक लाइब्रेरीज कॉन्फ्रेंस, 2015	3
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित नवीनतम पुस्तकें	4
पुस्तक परिचय	6
श्रद्धांजलि	7
पठन के द्वारा शिक्षा	7
सेवानिवृत्ति	8

नवीनतम प्रकाशन

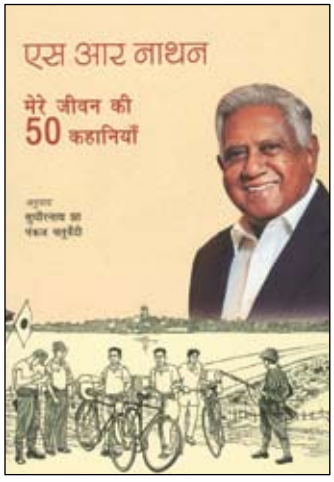

एस.आर. नाथन : मेरे जीवन की 50 कहानियाँ

अनु. : सुधीर नाथ झा, पंकज चतुर्वेदी

पृ. 184 ₹ 265

ISBN 978-81-237-7382-7

हवाना अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला

24वाँ हवाना अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेला 12 से 22 फरवरी, 2015 तक क्यूबा में आयोजित किया गया। इस वर्ष मेले के लिए स्लोगन रखा गया 'टू रीड इज टू ग्रो'। इस वर्ष मेले में विशिष्ट अतिथि देश का सम्मान भारत को दिया गया।

मेले का शुभारंभ 12 फरवरी, 2015 को नकावेंजा फोर्ट (पुस्तक मेला ग्राउंड) में ध्वजारोहण समारोह से किया गया। इस अवसर पर क्यूबन बैंड द्वारा बजायी गई मधुर धुनों पर भारतीय तथा क्यूबाई राष्ट्रगान गाये गए। यहाँ संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सचिव, श्री सुरेंद्र सिंह; क्यूबा में भारत के राजदूत, श्री जी. राजशेखर; क्यूबन बुक इंस्टीट्यूट के निदेशक, श्री रवींद्र नारंग तथा क्यूबा में भारतीय दूतावास से आए विभिन्न गणमान्य अतिथि उपस्थित थे।

इस मेले के ज़रिये प्रकाशन जगत के पेशेवरों तथा पुस्तक जगत के विशेषज्ञों को अपने विचार साझा करने का एक सुनहरा अवसर प्राप्त हुआ। प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी मेले में अनेक शैक्षणिक, व्यावसायिक एवं साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किये गए जिनमें शामिल हैं— विचार गोष्ठी, श्रद्धांजलि कार्यक्रम, पैनल चर्चाएँ, व्याख्यान, पठन-सत्र, पुस्तक लोकार्पण आदि।

हवाना अंतरराष्ट्रीय पुस्तक मेले में भारत ने पहली बार विशिष्ट अतिथि देश के रूप में भाग लिया। यहाँ एनबीटी द्वारा भारतीय पुस्तकों की प्रदर्शनी लगायी गई। मेले में क्यूबाई पाठकों एवं पुस्तक-प्रेमियों के लिए भारतीय पुस्तकें विशेष आकर्षण का केंद्र थीं।

मेले में पुस्तक-प्रेमियों को उपन्यास, बाल-पुस्तकें, कहानी संग्रह, प्राचीन तथा आधुनिक साहित्य पर आधारित पुस्तकें अत्यंत आकर्षित कर रही थीं। यहाँ एनबीटी द्वारा प्रकाशित पुस्तकों के अतिरिक्त 13 अन्य प्रकाशकों की पुस्तकें भी प्रदर्शित की गईं।

क्यूबा में आयोजित इस साहित्यिक समारोह में 31 देशों के 199 प्रदर्शकों ने भाग लिया।

रा.पु. न्यास की ओर से इस पुस्तक मेले का प्रतिनिधित्व, न्यास में सहायक निदेशक (उत्पादन) श्री तरुण दवे ने किया।

विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस

प्रत्येक वर्ष 23 अप्रैल को विश्व पुस्तक एवं कॉपीराइट दिवस मनाया जाता है। संयुक्त राष्ट्र के शैक्षिक संगठन, यूनेस्को (UNESCO) द्वारा पठन एवं प्रकाशन के प्रोन्नयन एवं बौद्धिक संपदा को कॉपीराइट (प्रतिलिप्यधिकार) के द्वारा संरक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से यह दिवस मनाया जाता है। यह दिवस यूनेस्को के निर्णय के आलोक में पहली बार 1995 में मनाया गया।

आखिर 23 अप्रैल को ही पुस्तक दिवस के रूप में क्यों मनाया जाता है? इसके पीछे कुछ साहित्यिक कारण हैं। 23 अप्रैल का पुस्तक के साथ पहला संपर्क स्पेन में 1923 में देखने को मिला, जब वहाँ के पुस्तक विक्रेताओं ने प्रख्यात स्पेनिश लेखक मिगुएल डी सरवांटेज, डॉन क्विक्जोट उपन्यास के रचनाकार, को सम्मान देने के लिए इस दिवस को चुना। सरवांटेज का इसी दिन 1616 ई. में निधन हो गया था। वैसे, यह सेंट जॉर्ज दिवस (यह भी 23 अप्रैल को) समारोह का भी एक अवसर है। मध्यकालीन समय में कैटालोनिया में यह परंपरा थी कि 23 अप्रैल को पुरुष अपनी प्रेमिकाओं को गुलाब उपहार में देते थे और बदले में प्रेमिकाएँ उन्हें पुस्तकें देती थीं।

23 अप्रैल विश्व साहित्य की दुनिया में कई अन्य ख्यात-प्रख्यात लेखकों के जन्म व निधन की तिथि के रूप में भी चर्चित है। यह प्रख्यात लेखक विलियम शेक्सपियर के जन्म व मृत्यु की भी तिथि है, साथ ही इन्का गार्सिलासो डी ला वेगा एवं जोसेप प्ला का निधन भी इसी दिन हुआ। मॉरीस द्रुओं, व्लादिमीर नाबोकोव, मैनुएल मेजिआ वलेजो एवं हॉलदॉर लैक्सनेस जैसे कई अन्य लेखकों का जन्म दिवस भी है यह तिथि।

यूनेस्को की आम सभा द्वारा पुस्तक एवं लेखकों को इस दिवस पर याद करने तथा आम लोगों, विशेषकर युवाओं में पुस्तक पठन को आनंद के रूप में लेने को प्रोत्साहित करने का उद्देश्य भी इस दिवस को पुस्तक दिवस के रूप में मनाने का कारण बना। आज विश्व पुस्तक दिवस पूरी दुनिया में लेखक, प्रकाशक, पुस्तक विक्रेता एवं पुस्तक-प्रेमियों के बीच एक पुस्तक पर्व के रूप में समादृत हो चला है। विश्व पुस्तक दिवस, पुस्तक पठन एवं पुस्तक प्रोन्नयन के लिए भी अब जाना-पहचाना दिवस बन गया है। 100 से अधिक देशों में यह दिवस मनाया जाता है और इस अवसर पर पुस्तक से संबंधित अनेकानेक गतिविधियाँ होती हैं। विश्व पुस्तक दिवस

प्रकाशकों, पुस्तक विक्रेताओं और उन इच्छित पक्षों के बीच एक परस्पर भागीदारी और संपर्क सेतु भी है जिन सबका मूल लक्ष्य पुस्तकोन्नयन एवं पुस्तक पठन रुचि में विस्तार के साथ ही पूरे विश्व में पुस्तक संस्कृति का प्रचार एवं प्रसार करना भी है।

यूनाइटेड किंग्डम (यू.के.) और आयरलैंड में विश्व पुस्तक दिवस का मुख्य उद्देश्य बच्चों को किताबों एवं पठन के आनंद की खोज एवं उनके पास अपना एक पुस्तक हो यह अवसर उपलब्ध कराके उन्हें प्रोत्साहित करना है। यू.के. में विश्व पुस्तक दिवस की शुरुआत 1998 में हुई। यहाँ पुस्तक दिवस पर अभिभावक अपने बच्चों के लिए विशेष रूप से निर्मित पुस्तक दिवस परिधान खरीदते या बनवाते हैं। यह परिधान किसी ऐतिहासिक चरित्र का हो सकता है या आधुनिक समय के किसी चर्चित साहित्यिक चरित्र, जैसे हैरी पॉटर आदि का। सच पूछा जाए तो यू.के. एवं आयरलैंड में पुस्तक दिवस का कुछ विशेष ही मतलब, महत्व और आकर्षण होता है जो यहाँ उसे एक त्योहार का रूप दे देता है।

यूनेस्को प्रति वर्ष विश्व के किसी एक देश के एक शहर को यूनेस्को विश्व पुस्तक राजधानी का दर्जा प्रदान करता है। वह शहर उस विशेष वर्ष, जो 23 अप्रैल से अगले साल 22 अप्रैल तक होता है, में पुस्तक एवं पुस्तक से जुड़ी अनेकानेक गतिविधियाँ आयोजित करता है। इससे उस शहर विशेष के बहाने पूरे देश में पुस्तक संस्कृति का विकास होता है। वर्तमान विश्व पुस्तक राजधानी रिपब्लिक ऑफ कोरिया का शहर इंचिओन है। अगला विश्व पुस्तक राजधानी रॉक्लॉ (पोलैंड) होगा। दिल्ली शहर को 2003 में विश्व पुस्तक राजधानी बनने का गौरव मिला था।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के लेखकों को पद्म सम्मान

श्रीमती उषाकिरण खान

श्री ज्ञान चतुर्वेदी

इंडिया पब्लिक लाइब्रेरीज कॉन्फ्रेंस, 2015

नई दिल्ली स्थित इंडिया इंटरनेशनल सेंटर, लोधी एस्टेट में 17 से 19 मार्च, 2015 की अवधि में 'इंडिया पब्लिक लाइब्रेरीज कॉन्फ्रेंस (आईपीएलसी), 2015' का आयोजन संपन्न हुआ। इस अवधि में 'ट्रांसफॉर्मिंग पब्लिक लाइब्रेरीज इन इंडिया : एनविजनिंग द फ्यूचर' थीम पर एक दो दिवसीय सम्मेलन हुआ, एक दिन पुस्तकालय के अधिकारियों एवं पेशेवरों के लिए कार्यशाला का आयोजन रखा गया।

यह सम्मेलन अलाभकारी संगठन, डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन (डीईएफ) एवं डेवलपिंग लाइब्रेरी नेटवर्क (DELNET-डेलनेट) द्वारा शुरू की गई व्यापक पहल का एक हिस्सा था जिसे बिल एंड मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन का सहयोग प्राप्त है। विदित हो कि पब्लिक लाइब्रेरी स्टेकहोल्डर्स एवं राष्ट्रीय पुस्तक न्यास समेत अनेक भागीदारों की मेजबानी में भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों को शक्तिशाली बनाने एवं प्रोन्नत करने के विचार से इस सम्मेलन का आयोजन किया गया।

सम्मेलन का उद्घाटन प्रधानमंत्री कार्यालय में माननीय राज्यमंत्री, डॉ. जीतेंद्र सिंह ने किया। उन्होंने पुस्तकों को 'सदाबहार खजाना' के रूप में निरूपित किया। रा.पु. न्यास का प्रतिनिधित्व न्यास के अध्यक्ष, श्री बल्देव भाई शर्मा ने किया। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि एनबीटी पुस्तक एवं पठन-आदत का प्रोन्नयन करता है। यह समाज के हर वर्ग और आयुवर्ग के लिए वैविध्यपूर्ण पुस्तकों का प्रकाशन करता है। उन्होंने यह जानकारी भी दी कि न्यास सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में उचित मूल्य की पुस्तकों का प्रकाशन करता है। न्यास द्वारा देश और विदेशों में विविध पुस्तक मेलों एवं प्रदर्शनियों आदि के आयोजन एवं न्यास की भागीदारी समेत पुस्तकोन्नयन के लिए सचल पुस्तक वाहन के प्रयोग आदि के संबंध में भी उन्होंने बताया।

न्यास-अध्यक्ष ने 'इंडिया स्टेटस पेपर ऑन पब्लिक लाइब्रेरीज' विषयाधारित दूसरे सत्र की अध्यक्षता भी की एवं सार्वजनिक पुस्तकालयों के लिए की गई अनुशंसाओं की घोषणा की। 19 मार्च को तीन समानांतर कार्यशालाओं एवं एक अध्ययन यात्रा का आयोजन किया गया। कार्यशाला का विषय था– 'बिल्डिंग स्ट्रॉन्ग लाइब्रेरी एसोसिएशंस'। दूसरी

कार्यशाला का विषय था– 'रीडिजाइनिंग एंड मॉडर्नाइजिंग योर लाइब्रेरी स्पेस' तथा तीसरी कार्यशाला 'लिंकिंग चिल्ड्रेन एंड स्टूडेंट्स विद पब्लिक लाइब्रेरीज' विषय पर थी।

इन कार्यशालाओं के समापन के बाद भागीदार राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के पुस्तकालय में आए एवं पुस्तकालयाध्यक्ष-सह-प्रलेखन अधिकारी एवं अन्य पुस्तकालयकर्मियों से मिले जिन्होंने उन्हें रा.बा.सा.कें. पुस्तकालय के संबंध में जानकारी दी, साथ ही इस पुस्तकालय द्वारा डिजिटल युग की तैयारी के संदर्भ में की गई पहल के बारे में भी बताया। बाद में ये प्रतिभागी दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी एवं राजीव गाँधी फाउंडेशन भी गए।

समापन समारोह में 'भारत में सार्वजनिक पुस्तकालयों के भविष्य हेतु अनुशंसा' के संबंध में अतिरिक्त सचिव, संस्कृति मंत्रालय, श्री राघव चंद्र ने उत्तर दिया।

इंडिया पब्लिक लाइब्रेरीज कॉन्फ्रेंस 2015 को संस्कृति मंत्रालय से सहयोग प्राप्त था। इसमें अंतरराष्ट्रीय (यूनाइटेड किंग्डम, डेनमार्क, जर्मनी, न्यूजीलैंड, ऑस्ट्रेलिया, संयुक्त राज्य अमेरिका, नेपाल, थाइलैंड) और राष्ट्रीय (राज्य एवं जिला स्तरीय सार्वजनिक पुस्तकालय क्षेत्र एवं अन्य सार्वजनिक पुस्तकालय पेशेवर) स्तर के 400 से अधिक वक्ता एवं प्रतिनिधि शामिल हुए।

आईपीएलसी 2015 के मसौदा अनुशंसाओं को अंतिम रूप दे दिया गया है और भारत में सार्वजनिक पुस्तकालय तंत्र को और अधिक बेहतर बनाने के लिए अभिनव विचारों एवं दृष्टिकोणों के वृहत्तर प्रतिनिधित्व हेतु पब्लिक लाइब्रेरी स्टेकहोल्डरों के सुझाव एवं विचार आमंत्रित हैं। वैसे, सम्मेलन के दौरान अनेक सुझाव एवं अनुशंसाएँ प्राप्त हुई हैं।

अनुशंसाओं के अंतिम सेट को राष्ट्रीय एवं राज्य पुस्तकालय अधिकारियों के सामने अभी प्रस्तुत किया जाना है जिनमें शामिल हैं–संस्कृति मंत्रालय, राज्य शिक्षा विभाग (सार्वजनिक पुस्तकालयों का प्रभार), अनुदान निर्माण एजेंसियाँ एवं अन्य महत्वपूर्ण नीति एवं कार्यान्वयन एजेंसियाँ।

सम्मेलन के दौरान दो दस्तावेजों का लोकार्पण किया गया, ये थीं– (i) 'कम्यूनिटी/एन्गेजमेंट/लाइब्रेरीज'; सारे भारत से प्राप्त 'केस' कथाओं का संग्रह तथा (ii) 'ट्रांसफॉर्मिंग पब्लिक लाइब्रेरीज'। सम्मेलन से पूर्व 'डिजिटल एम्पावरमेंट फाउंडेशन' ने समुदाय एवं लोक के साथ कार्य कर रहे पुस्तकालयों के लिए 'बेस्ट प्रैक्टिस अवार्ड' की घोषणा की। इन प्रयोगों की पहचान एवं संकलन 'इनपुट', 'आउटपुट' एवं 'आउटकम' में नवाचार पर आधारित है।

इस अवसर पर एक पोस्टर प्रदर्शनी भी लगायी गई थी। एक अच्छी पुस्तकालय संस्कृति के निर्माण के लिए ऐसे आयोजन की आवश्यकता पर अधिकांश वक्ता और प्रतिभागी सहमत थे।

न्यास की ओर से इस सम्मेलन में पुस्तकालयाध्यक्ष-सह-प्रलेखन अधिकारी, रा.बा.सा.कें., श्रीमती मिथलेश अनंत एवं पुस्तकालय सहायक श्री अमीर जिलानी ने भाग लिया।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत से प्रकाशित नवीनतम पुस्तकें

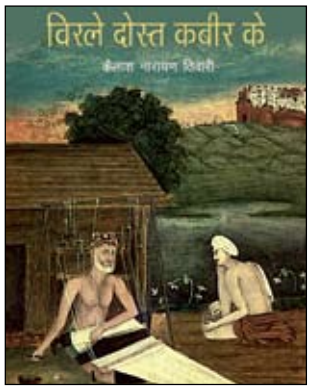

विरले दोस्त कबीर के

कैलाश नारायण तिवारी

पृ. 160 ₹ 155

कबीर के बारे में अब तक अनेक पुस्तकें आ चुकी हैं। इस क्रम में यह भी एक पुस्तक, लेकिन उपन्यास रूप में। कबीर के जीवन संघर्ष को समझने का प्रयास है यहाँ। 'मध्यकाल के श्रेष्ठ कवि', 'दलित चिंतन के पहले प्रस्तोता' तथा 'प्रेम के कवि' आदि अनेक रूपों में देखे-समझे जाने वाले ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के आत्मसंघर्ष को पढ़ना स्वाभाविक रूप से एक पाठक को दिलचस्प लगेगा।

ISBN 978-81-237-7327-8

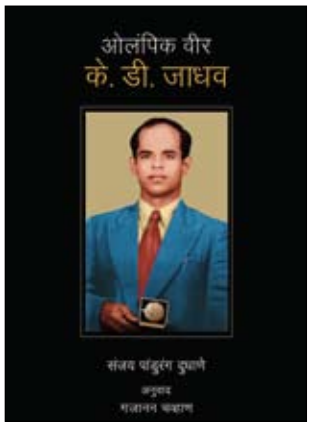

ओलंपिक वीर के.डी. जाधव

संजय पांडुरंग दुधाणे

अनु. : गजानन चह्वान

पृ. 118 ₹ 135

भारत का नाम ओलंपिक खेलों में रौशन करने वालों में के.डी. जाधव (खाशाबा जाधव) का नाम सम्मान से लिया जाता है। 1925 में महाराष्ट्र के कराड में पैदा होने वाले खाशाबा जाधव ने 1948 के लंदन ओलंपिक में कुश्ती में छठा स्थान पाया था, जबकि 1952 के हेलसिंकी ओलंपिक में कांस्य पदक विजेता बने। खाशाबा का प्रारंभिक जीवन बड़ा ही संघर्षपूर्ण रहा है। दुर्भाग्य से, ओलंपिक विजेता होने के बाद भी इन्हें यथोचित सम्मान नहीं मिला और सरकारी नौकरी में रहते हुए पदोन्नति के लिए लड़ना पड़ा। 1955 में वे सब इंस्पेक्टर के रूप में नियुक्त हुए थे और 1983 में सहायक पुलिस आयुक्त पद से अवकाश ग्रहण किया। 2001 में इन्हें मरणोपरांत (मृत्यु 1984 में) अर्जुन पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जाधव के जीवन संघर्ष पर एक प्रामाणिक पुस्तक।

ISBN 978-81-237-7337-7

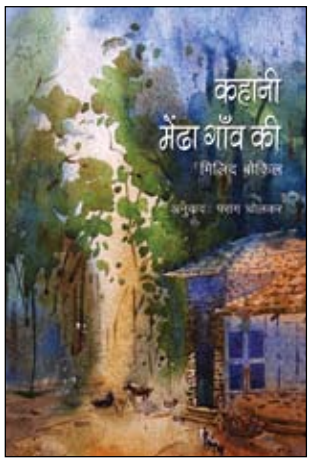

कहानी मेंढा गाँव की

मिलिंद बोकिल

अनु.: पराग चोलकर

पृ. 154 ₹ 170

वैसे तो महाराष्ट्र का गढ़चिरोली जिला नक्सली हिंसा के कारण पहचाना जाता है, लेकिन यहाँ के एक छोटे-से मेंढा गाँव ने गाँधीवादी तरीके से लंबे संघर्ष के बाद स्वशासन का अधिकार प्राप्त किया, वह भी वर्तमान कानूनों के अंतर्गत ही। गाँव के प्राकृतिक संसाधनों पर ग्राम सभा का हक हो और उससे होने वाली आय का इस्तेमाल स्थानीय स्तर पर तैयार योजनाओं पर हो, इसका प्रतीक बना वहाँ पैदा होने वाला बाँस। यहाँ सरकार ने माना कि नौकरशाही के बूते वनों की रक्षा संभव नहीं है, इसके लिए स्थानीय समाज की सहभागिता आवश्यक है। इलाके के बाँस को एक कागज मिल को लंबी लीज पर दिया हुआ था, सो गाँववाले अपने निजी इस्तेमाल के लिए भी बाँस नहीं काट सकते थे। बाँस काटा तो वन विभाग कार्यवाही करता था। ऐसा ही कुछ तेंदु पत्ता व अन्य वनोपजों के साथ था। यह पुस्तक ग्रामीणों के लंबे संघर्ष, संयम और सफलता की जीवंत कहानी प्रस्तुत करती है। यह देश का पहला ऐसा गाँव बना जिसने सामुदायिक वनाधिकार प्राप्त किया।

ISBN 978-81-237-7348-3

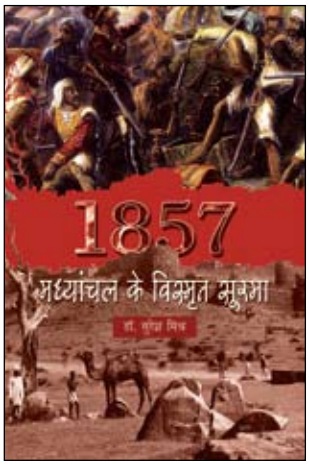

1857 : मध्यांचल के विस्मृत सूरमा

डॉ. सुरेश मिश्र

पृ. 208 ₹ 220

भारत की आजादी का पहला संघर्ष कहे जाने वाले 1857 के विद्रोह के दौरान अँग्रेजों को खदेड़ने की घटनाएँ केवल दिल्ली, मेरठ या कानपुर के आसपास ही घटित नहीं हुई थीं, बल्कि मध्यांचल के सुदूर इलाकों में भी कई राजघरानों व आम लोगों ने अपने प्राणों की आहुति दी थी। ऐसे कई लोगों के नाम इतिहास के पन्नों पर इतने चर्चित नहीं हुए, जितना उनका योगदान था। इस पुस्तक में 24 ऐसे विस्मृत सूरमाओं की संघर्ष-गाथा को प्रस्तुत किया गया है, जिन्होंने अँग्रेज शासन की चूलें हिला दी थीं। इसमें बुंदेलखंड के देसपत बुंदेला, फरज़ंद अली, दौलत सिंह कछवाहा हैं, तो मालवा-निमाड़ के सआदत खाँ, राजा सरजू प्रसाद, सीताराम कँवर आदि शामिल हैं। पुस्तक में इन भुला दिये गए लड़ाकों के इलाकों में ईस्ट इंडिया कंपनी की नीतियों के कारण परेशान आम लोगों, वहाँ के जनाक्रोश को भी प्रस्तुत किया गया है।

ISBN 978-81-237-7355-1

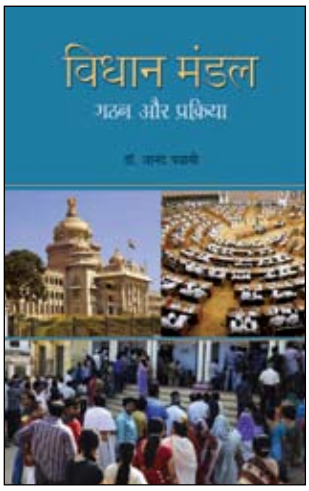

विधान मंडल : गठन और प्रक्रिया

डॉ. आनंद पयासी

पृ. 204 ₹ 200

भारत में केवल छह राज्यों में ही दो सदन हैं—विधान सभा और विधान मंडल। जिन राज्यों में दोनों होते हैं, ऐसे सदनों को द्वि-स्तरीय (बाई-कैमरेल) कहा जाता है। विधान मंडल का कार्य कानून बनाने का होता है। इसी कारण इसको विधान परिषद और विधान सभा (लेजिस्लेटिव कौंसिल तथा लेजिस्लेटिव एसेंबली) कहा जाता है। इनके सदस्यों को एमएलसी कहते हैं। चूँकि ये विधायन का काम करते हैं, सो इनको 'विधायक' भी कहा जाता है।

विधान सभा का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है तथा विधान परिषद लगातार रहती है। इसके 1/3 सदस्य हर दूसरे वर्ष निवृत्त (रिटायर) होते हैं। इनका कार्यकाल छह वर्ष का होता है। विधान सभा के सदस्य जनता के द्वारा चयन करके (इलेक्शन के द्वारा) भेजे जाते हैं, जबकि विधान परिषद का गठन नगर पालिका, जिला बोर्ड, विश्वविद्यालयों के स्नातकों में से, विद्यालय के शिक्षकों में से तथा राज्य की विधान सभा के सदस्यों द्वारा किया जाता है तथा राज्यपाल द्वारा नामांकित व्यक्तियों के सदस्य बनने के बाद इसका गठन होता है।

इस पुस्तक में विधान मंडलों के बारे में संविधान में उल्लिखित प्रावधान, कार्य प्रणाली, अधिकार व कर्तव्य आदि का वर्णन किया गया है। अधिकतर विधान मंडलों में प्रक्रिया संबंधी नियम लगभग एक जैसे ही हैं। कुछ विधान सभाओं में अपवादस्वरूप कुछ समितियाँ और कार्य प्रणालियाँ हैं, उनका भी इसमें विवरण दिया गया है।

ISBN 978-81-237-7342-1

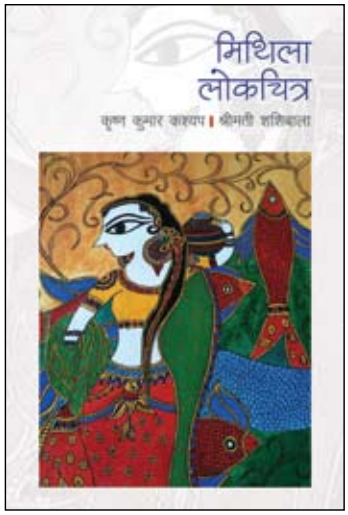

मिथिला लोकचित्र

कृष्ण कुमार कश्यप, शशिबाला

पृ. 160 ₹ 180

लोक चित्रों की आधुनिक मधुबनी शैली का विकास 17वीं शताब्दी के आस-पास माना जाता है। पारंपरिक पेंटिंग में पौधों की पत्तियों, फलों तथा फूलों से रंग निकालकर कपड़े या कागज के कैनवस पर भरा जाता है। मधुबनी पेंटिंग शैली की विशेषता इसके निर्माण में महिला कलाकारों की मुख्य भूमिका है। इन लोक कलाकारों के द्वारा तैयार किया हुआ कोहबर, शिव-पार्वती विवाह, राम-जानकी स्वयंवर, कृष्ण लीला जैसे विषयों पर पेंटिंग में मिथिला संस्कृति की पहचान छिपी है। मधुबनी पेंटिंग में ज्ञान, दर्शन तथा वैज्ञानिक एवं धार्मिक तथ्यों पर आधारित लोक संस्कृति को मुखरित करने की अद्भुत क्षमता है। यह पुस्तक मिथिला लोकचित्रों को बनाने, उसके दर्शन, विशेषताओं का प्रामाणिक दस्तावेज है।

ISBN 978-81-237-7356-8

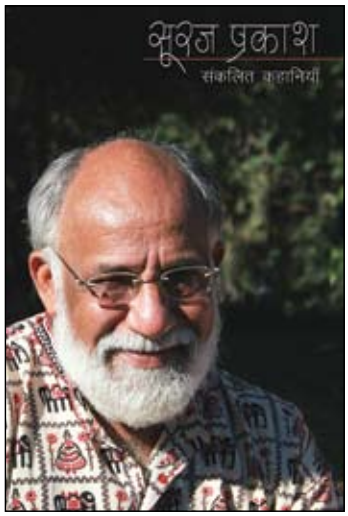

सूरज प्रकाश : संकलित कहानियाँ

पृ. 388 ₹ 375

सूरज प्रकाश के पात्र काल्पनिक नहीं हैं अपितु समाज के वे रेखाचित्र हैं जिन्हें हर व्यक्ति आत्मसात करता रहता है। रोजमर्रा की जद्दोजहद, संघर्ष, प्रेम, विसंगतियाँ, तनाव आदि कई ऐसे विषय हैं जिन्हें लेखक ने शिद्दत से जिया है और कई ऐसे अनछुए पहलुओं को प्रकाश में लाने का जोखिम भी उठाया है जिसे प्रायः रचनाकार लाने में हिचकते या घबराते हैं। कथाकार की इन कहानियों में महानगर का असली चेहरा झाँकता नहीं, बहुत कुछ कहता भी है जिसमें एक दर्द, एक उल्लास और जीवन को तसल्ली से देखने का एक चश्मा भी यहाँ विकसित होता दिखाई देता है। लेखक सूरज प्रकाश को लेखन से प्रेम है और मानवीय सरोकार, जिसकी भावनाएँ पवित्र हैं और समर्थन, निष्ठा से अपने लेखन को कई दिशा में मोड़ने में सक्षम।

ISBN 978-81-237-7358-2

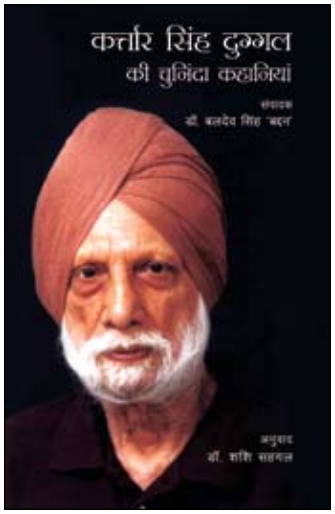

कर्त्तार सिंह दुग्गल की चुनिंदा कहानियाँ

संपा. : बलदेव सिंह बद्दन

अनु. : शशि सहगल पृ. 366 ₹ 385

कर्त्तार सिंह दुग्गल की कहानियों के गहरे अध्ययन से उनकी कहानी कला की अनेक खूबियाँ हमारे सामने आती हैं। कई बार वे एक छोटी-सी घटना को अपने कलात्मक संस्पर्श से एक अच्छी कहानी में ढाल देते हैं। 1947 से पहले शुरू होकर उनकी कहानियाँ 1984 के दंगों के बाद तक के अनेक हालात, परिस्थितियों के माहौल को बयान कर हमें तत्कालीन और फिर समकालीन समय के साथ जोड़ती हैं। लेखक के पास न तो विषयों की कमी है, और न ही उन विषयों की प्रस्तुति संबंधी युक्तियों की। इसमें दो राय नहीं हो सकती है कि करतार सिंह दुग्गल पंजाबी के अत्यंत सफल, चर्चित और समर्थ कहानीकार रहे हैं। उनकी कहानियाँ जीवन की तल्खियों से संवेदनशील और भावुक मन की बातें करती चलती हैं। दुग्गल के जाने से सचमुच कहानी के एक युग का अंत हो गया है। लेकिन यह शाश्वत सत्य है कि पंजाबी कहानी का इतिहास दुग्गल के बिना नहीं लिखा जाएगा। करतार सिंह दुग्गल ने अपनी कुछ कहानियों के द्वारा पंजाबी कहानियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर का बना दिया है।

ISBN 978-81-237-7332-2

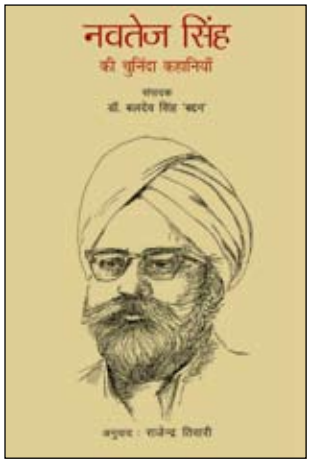

नवतेज सिंह की चुनिंदा कहानियाँ

संपा. : बलदेव सिंह बद्दन

अनु. : राजेन्द्र तिवारी

पृ. 234 ₹ 245

नवतेज सिंह (8-1-1925 – 11-8-1981) के कहानी अध्ययन के समय यह बात सहज ही स्पष्ट होती है कि वह एक संवेदनशील लेखक हैं। दूसरे साहित्यकारों की तरह अपने परिवेश से लापरवाह नहीं, बल्कि कई बार तो बड़े गौर से किसी घटना को घटित होते देखते हैं और उसमें गंभीर तथ्य तलाशने की कोशिश करते हैं। प्रायः समाज की बदलती स्थितियों और कद्र-ओ-कीमत की ओर संकेत कर जाते हैं। नवतेज सिंह सचेत प्रगतिवादी लेखक थे जिनका संबंध कम्युनिस्ट पार्टी से भी रहा। उन्होंने निम्न वर्ग की तंगी-तुर्शी का हृदयवेधक चित्रण किया है। चूँकि वह मनोविज्ञान के छात्र थे इससे उनको अपने पात्रों के अंतर्मन में झाँककर पढ़ने और प्रस्तुत करने की महारत हासिल है। उनके पात्र ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों से हैं। व्यंग्य सृजन को वह कहानी सृजन की प्रमुख रचना-युक्ति के तौर पर इस्तेमाल करते हैं। यह व्यंग्य अकसर शोषक वर्ग की ज्यादतियों पर होता है। जहाँ नवतेज सिंह ने कहानियों में कृतकारों, कामगारों की आवाज बुलंद की है, वहीं शुद्ध साहित्यिक और शृंगारवादी दृष्टि से भी कहानियाँ लिखी हैं। उन्होंने निबंध, अनुवाद और पत्रकारिता आदि अनेक साहित्यिक विधा पर सफलतापूर्वक कलम चलाई है।

ISBN 978-81-237-7334-6

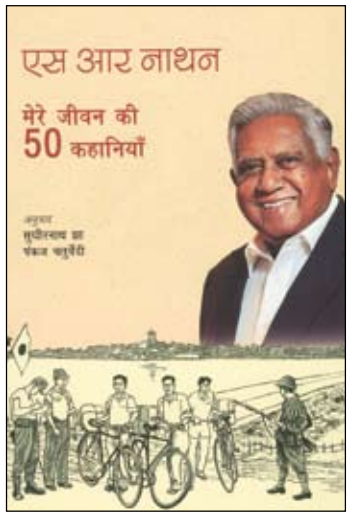

एस. आर. नाथन : मेरे जीवन की 50 कहानियाँ

अनु. : सुधीर नाथ झा, पंकज चतुर्वेदी

पृ. 184 ₹ 265

मेरे जीवन की 50 कहानियाँ पुस्तक में 10 साल तक सिंगापुर के राष्ट्रपति रहे भारतीय मूल के एस. आर. नाथन ने अपने जीवन के शुरुआती जीवन तक की संघर्ष यात्रा की प्रेरक स्मृतियों को प्रस्तुत किया है। श्री नाथन ने अपने निजी अनुभवों के खजाने में से कई सबक इस उम्मीद के साथ साझा किए हैं, ताकि बच्चे इससे कुछ सीख सकें। इस पुस्तक का प्रत्येक अध्याय सिंगापुर के अतीत, इतिहास, राजनीति, विकास की चमत्कृत करने वाली गाथा भी कहता है।

बेहतरीन रेखाचित्रों से सज्जित यह पुस्तक धैर्यवान और दृढ़निश्चय का अनुकरणीय उदाहरण है जो प्रत्येक बच्चे को अवश्य पढ़ना चाहिए।

अनुवादक सुधीरनाथ झा हिंदी व अँग्रेजी पर समान अधिकार रखते हैं तथा कई महत्वपूर्ण पुस्तकों के अनुवादक हैं।

पंकज चतुर्वेदी, लेखक, अनुवादक होने के साथ-साथ राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के संपादकीय विभाग से संबद्ध हैं।

ISBN 978-81-237-7382-7

पुस्तक परिचय

उस रहगुजर की तलाश है (रिपोर्ताज)
राजेंद्र राव पृ. 160 ₹ 300
सामयिक बुक्स, जटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-02
कथेतर लेखन करने वाले रचनाकारों का जब जिक्र होता है तो राजेंद्र राव का नाम ऊपर की पंक्तियों में शामिल होता है। प्रस्तुत संग्रह में लेखक के रिपोर्ताज ही नहीं, साक्षात्कार और संस्मरण भी है। पं. सोहनलाल द्विवेदी से साक्षात्कार हो या पं. राम किंकरजी से वार्ता, या फिर कोलकाता का बदनाम 'हाटे बाजारे' – सब यहाँ हैं।

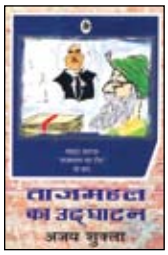

ताजमहल का उद्घाटन
अजय शुक्ला पृ. 96 ₹ 200
राजकमल प्रकाशन
'ताजमहल का टेंडर' के बाद लेखक का यह दूसरा नाटक है 'ताजमहल का उद्घाटन'। ताजमहल का टेंडर तो जारी हो चुका है। चीफ इंजीनियर गुप्ता जी की देखरेख में उनके विश्वस्त ठेकेदार भैया जी को ठेका मिलना ही था। ठेका मिला और घोटाले के आरोपों के बीच काम शुरू हो गया। लेकिन औरंगजेब के सत्ता सँभालने के बाद दारा शिकोह उसके पीछे पड़ गया। अदालत के हस्तक्षेप पर औरंगजेब की ताजपोशी खतरे में पड़ गई। ऐसी परिस्थिति में कैसे होगा ताजमहल का उद्घाटन? यह जानने के लिए इस पूरे नाटक से गुजरना होगा।

हिंदी आलोचना : समकालीन परिदृश्य
कृष्णदत्त पालीवाल पृ. 160 ₹ 300
सामयिक बुक्स, जाटवाड़ा, दरियागंज, नई दिल्ली-02
'आलोचना' समकालीन साहित्य को आईना दिखाने वाली विधा है। आलोचना में आलोचक को स्थितप्रज्ञ होकर तटस्थ द्रष्टा बन जाना होता है तभी वह अपने समकालीन से सही न्याय कर पाता है। पालीवाल साहब के यहाँ ऐसी ही तटस्थ दृष्टि रही है। हाल ही में दिवंगत लेखक की यह एक महत्वपूर्ण कृति है, जिसकी आलोचना अवधि 1980 से 2010 तक की है।

स्वतंत्रता संग्राम के बावन रक्त बिंदु
अमर सिंह यादव पृ. 264 ₹ 350
अनु प्रकाशन, प्लॉट 146, चतुर्थ तल, ज्ञानखंड-3, इंदिरा पुरम, गाजियाबाद-201010
यह पुस्तक ब्रिटिश शासन की चूलें हिला देने वाली देशभक्त वीरांगनाओं की काव्यमयी जीवनी है। ऐसी बावन बलिदानी वीरांगनाओं के जीवन एवं कर्म को काव्य में पिरोकर कवि ने अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। कुछ विदेशी और समकालीन स्त्रीपात्र भी इनमें शामिल हैं।

ताल ठोक के (कविता संग्रह)
दामिनी पृ. 240 ₹ 495
आत्माराम एंड संस, 1376, कश्मीरी गेट, दिल्ली-110006
पुरुष निर्मित नकारों और वर्जनाओं से इतर दामिनी ने स्त्रीवाद के दामन में कुछ बिलकुल ताजे खिले-अधखिले-अनखिले कविता-पुष्प रख छोड़े हैं जिन्हें देखकर, छूकर या सूँघकर पुरुष सत्ता की स्वनिर्मित दीवार भुरभुराकर गिर सकती है। दामिनी ने जो कहा 'ताल ठोक' के कहा।

मत छीनो आकाश (कविता संग्रह)
मधु आचार्य 'आशावादी' पृ. 112 ₹ 200
सूर्य प्रकाशन मंदिर, दाऊजी रोड (नेहरू मार्ग), बीकानेर, राजस्थान
जीवनानुभव से उपजी अनुभूतियाँ ही कविता की शक्ल अख्तियार कर गई हैं। यहाँ रंग-बेरंग-बहुरंग—जीवन के हर रंग, नूर या बेनूर, यहाँ दिखते हैं। शब्द सहज हैं, पर पाठक इन्हें पढ़कर 'असहज' हो सकते हैं।

चाक पर चढ़ी माटी (कविता संग्रह)
बलदेव वंशी पृ. 104 ₹ 200
अमरसत्य प्रकाशन, 109 ब्लॉक बी, प्रीत विहार, नई दिल्ली-92
बलदेव वंशी के प्रस्तुत कविता संग्रह की कविताओं में हमारे समय-समाज, संस्कृति, इतिहास, साहित्य और मिथक— इन सबका मणिकांचन संयोग है। उनके यहाँ प्रकृति एक नए तरह की भाषा ओढ़कर आती है : खुशबू ने यहाँ हस्ताक्षर किए हैं/फूलों की पत्तियों पर/देवता भी नतमस्तक हुए....

सृजन का रसायन
शिवमूर्ति पृ. 128 ₹ 250
राजकमल प्रकाशन
स्मृति के अपार विस्तार में शब्द, स्पर्श, रूप, रस व गंध के असंख्य अनुभवों में से कब कौन सृजन का सहयात्री बन जाए, कहना कठिन है। वरिष्ठ कथाकार शिवमूर्ति के गद्य का अनूठा आयाम उद्घाटित करती प्रस्तुत पुस्तक संस्मरण के शिल्प में उनकी रचना-प्रक्रिया को रेखांकित करती है। जीवनानुभवों के साथ साहित्य के अनेक प्रश्नों से संवाद करती एक अनूठी रचना।

हमारा समय (लघुकथा)
महेश दर्पण पृ. 98 ₹ 175
एपीएन पब्लिकेशंस, डब्लू.जेड. 87ए, गली नं. 4, हस्तसाल रोड, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059
लघुकथा वह विधा है जो एक उपन्यास या एक कहानी के कलेवर को अपने में समेटे बेहद कम शब्दों में हमारे-आपके सामने प्रस्तुत कर देती है। कथाकार के रूप में अधिक ज्ञात श्री दर्पण लघुकथा भी लिखते रहे हैं। प्रस्तुत संग्रह में उनकी 65 लघुकथाएँ संग्रहीत हैं जो समकालीन समय-समाज का आईना हैं।

पाँचवाँ मौसम (कविता संग्रह)
कुंती पृ. 80 ₹ 150
काफ्ला इंटरकांटिनेंटल, 3437, सेक्टर-46सी, चंडीगढ़-160047
'प्रेम' विषय को केंद्र में रखकर अब तक जितनी कविताएँ रची गई हैं शायद उसके अधिक किसी अन्य विषय पर नहीं। लेकिन प्रेम पर अपनी बात कहना कम नहीं हुआ। कवयित्री ने यहाँ प्रेम को ही केंद्र में रखते हुए तीसेक कविताएँ रची हैं। प्रेम के विविध रूप और आयामों को कवयित्री की निगाह से देखना आपको एक अलग एहसास देगा।

मुहब्बतों के देश में (उपन्यास)
अन्विता अग्रवाल पृ. 128 ₹ 250
मेघ प्रकाशन, 239, दरीबाकलाँ, चाँदनी चौक, दिल्ली-110006
शीर्षक उपन्यास के अलावा 'बिब्बो' शीर्षक उपन्यास भी शामिल। आज के युवाओं को संदेश देता यह उपन्यास दैहिक प्रेम की बजाय परादैहिक या रूहानी प्रेम पर जोर देता है। दूसरा उपन्यास भारत-पाकिस्तान विभाजन पर लिखा एक मार्मिक उपन्यास है। एक स्त्री के त्याग की मिसाल है 'बिब्बो'।

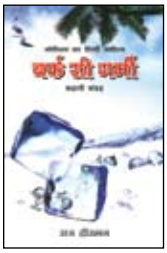

बर्फ-सी गर्मी (कहानी संग्रह)
राज हीरामन पृ. 98 ₹ 150
स्टार पब्लिकेशंस, 4/5बी, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-110002
देश से दूर, सुदूर मॉरीशस में निवासरत साहित्यकार राज हीरामन की कविता और कहानी दोनों ही आँगनों में समान आवाजाही है। मानव-मन के गहरे चितेरे इस लेखक की प्रस्तुत दस कहानियों में से अधिकांश में मनुष्यता के विकास की चाहत दिखती है। जिस देश और संस्कृति से हैं स्वभावतः वहाँ का परिवेश कहानियों में सीधे-सीधे दिखता भी है।

श्रद्धांजलि

कृष्णदत्त पालीवाल

हिंदी के वरिष्ठ आलोचक डॉ. कृष्णदत्त पालीवाल का 8 फरवरी, 2015 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 71 वर्ष के थे।

उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद में 1943 में जन्मे कृष्णदत्त पालीवाल दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रोफेसर और विभागाध्यक्ष रहे। तोक्यो यूनिवर्सिटी के विदेशी अध्ययन विभाग में कुछ समय तक विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे थे। उन्होंने हिंदी साहित्य को अपने लेखन से प्रभूत योगदान दिया। उनकी कुछ महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं—सृजन का अंतर्पाठ, उत्तर आधुनिक विमर्श, डॉ. आंबेडकर और समाज व्यवस्था, हिंदी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार, अज्ञेय होने का अर्थ, हिंदी का आलोचना पर्व और उत्तर आधुनिकतावाद की ओर। डॉ. पालीवाल को अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए थे। डॉ. पालीवाल ने अज्ञेय और माखनलाल चतुर्वेदी आदि कई शीर्षस्थ रचनाकारों पर रचना संचयनों का लेखन और संपादन किया था।

डॉ. पालीवाल का राष्ट्रीय पुस्तक न्यास से भी बड़ा गहरा रिश्ता था। वे न्यास की हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य थे। उनके द्वारा संपादित अनेक पुस्तकों का न्यास द्वारा प्रकाशन किया गया था। ये पुस्तकें हैं : 'अज्ञेय : प्रतिनिधि निबंध', 'अज्ञेय की प्रतिनिधि कहानियाँ' (दोनों का संपादन); 'बालमुकुंद गुप्त : संकलित निबंध' (चयन तथा भूमिका) एवं 'सम्पत्ति शास्त्र' ले. आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी (संकलन तथा भूमिका)।

कैलाश वाजपेयी

हिंदी के वरिष्ठ कवि कैलाश वाजपेयी का 1 अप्रैल, 2015 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे।

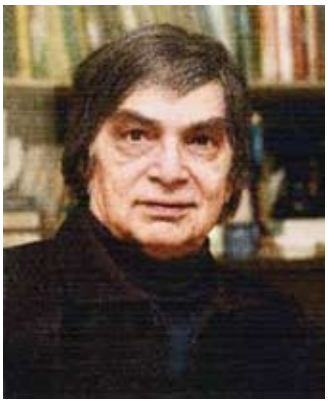

कैलाश वाजपेयी का जन्म 1936 में उत्तर प्रदेश के हमीरपुर में हुआ था। 1960 में टाइम्स ऑफ इंडिया में काम करने के बाद 1961 में वे दिल्ली विश्वविद्यालय के शिवाजी कॉलेज में पढ़ाने लगे। 2004 में डीयू के दक्षिण परिसर से सेवानिवृत्त हुए। वे कई विदेशी विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर भी रहे थे। उनकी कुल 34 पुस्तकें प्रकाशित हैं। इनमें कुछ उल्लेखनीय पुस्तकें थीं— 'आधुनिक हिंदी कविता में शिल्प' (शोध प्रबंध), 'संक्रांत', 'देहांत से हटकर', 'तीसरा अंधेरा', 'महास्वप्न का मध्यांतर', 'सूफीनामा', 'हवा में हस्ताक्षर', 'शब्द संसार' (कविता संग्रह) आदि। इसके अलावा उनके संपादित कविता संकलन, दर्शन पर अँग्रेजी और स्पानी भाषा में पुस्तकें, निबंध संग्रह, प्रबंध काव्य भी प्रकाशित हैं।

वाजपेयी अनेक भाषाओं के ज्ञाता थे। वे हिंदी के अलावा अँग्रेजी, संस्कृत और स्पानी भाषा भी जानते थे। उन्हें साहित्य अकादेमी समेत अनेक सम्मान-पुरस्कार मिले।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास हिंदी के इन दोनों साहित्यकारों के निधन पर उन्हें अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

पठन के द्वारा शिक्षा

इन दिनों देशभर में जब बालिका शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जाने लगा है अनेक गैर-सरकारी संगठन भी इस दिशा में काफी सक्रिय हो रहे हैं। ऐसी ही एक गैर-सरकारी संस्था, 'ओपेन डोर्स' (नोएडा, उ. प्र.) ने रा. पु. न्यास के प्रोत्साहन पर बालिकाओं को शिक्षा के प्रति प्रेरित करने के उद्देश्य से, अपनी पहल करते हुए सात बालिकाओं (6 से 10 वर्ष आयुवर्ग) को 13 मार्च, 2015 को राष्ट्रीय पुस्तक न्यास के अनुभाग, राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र के नई दिल्ली स्थित मुख्यालय-पुस्तकालय में लाए। पुस्तकालय-प्रमुख सह प्रलेखन अधिकारी, श्रीमती मिथलेश अनंत के मार्गदर्शन में इन बच्चियों ने पुस्तकालय का भ्रमण किया। उन्होंने पुस्तकालय में बच्चों के लिए प्रदर्शित, विभिन्न देशों और भाषाओं की, सैकड़ों पुस्तकें देखीं, उन्हें उलटा-पलटा। इन बालिकाओं ने रा. बा. सा. कें. के इस बाल पुस्तकालय में कुछ घंटे बिताए, कुछ चित्र बनाए एवं काफी आनंद उठाया। बालिकाओं ने अपनी अभिनव सृजनशीलता का प्रदर्शन करते हुए पुस्तकालय में रखी किसी भी विदेशी भाषा की चित्रात्मक पुस्तक को उठाकर, पुस्तक में चित्रित केवल चित्रों को ही देखकर, अपनी कल्पना से कहानी-निर्माण किया। रा. बा. सा. कें. के संपादक, श्री मानस रंजन महापात्र ने इन बालिकाओं को रा. पु. न्यास की कुछ पुस्तकें उपहार में दीं जिन्हें पाकर ये बड़ी खुश हुईं। बच्चियाँ यहाँ फिर आने का वादा कर अपने घर लौटीं। ओपेन डोर्स का प्रतिनिधित्व सुश्री तृप्ति राय ने किया।

R.N.I. No. 64445/96
Postal Regd. No. DL-SW-1/4077/2015-17
Licence to post without prepayment
L. No. U(SW) 23/2015-17
Mailing date 15/16 same month
Date of publication 08/04/2015

सेवानिवृत्ति

श्री दिनेश शर्मा : राष्ट्रीय पुस्तक न्यास में लगभग 32 वर्षों की सेवा में उपरांत, सहायक निदेशक श्री दिनेश शर्मा 28 फरवरी, 2015 को सेवानिवृत्त हो गए। सन् 1983 में न्यास में उन्होंने सेवारंभ किया था और विभिन्न पदों पर रहे। न्यास के लेखा विभाग में उन्होंने अपनी सेवाएँ दीं। सन् 2010 में वे लेखा अधिकारी से सहायक निदेशक पद पर प्रोन्नत हुए थे।

श्री चंडी प्रसाद : 1973 में रा. पु. न्यास में सेवारंभ करने के बाद, अनेक प्रोन्नतियाँ पाकर 31 मार्च, 2015 को सहायक पद से सेवानिवृत्त हुए। न्यास में 41 लंबे वर्षों तक की अपनी सेवा-अवधि में उन्होंने अनेक विभागों में कार्य किया।

श्री देवराज कुमार : 1974 में रा. पु. न्यास में सेवारंभ करने के बाद, दो प्रोन्नतियाँ पाकर 31 मार्च, 2015 को सहायक पद से सेवानिवृत्त हुए। न्यास में 40 वर्षों तक की अपनी लंबी सेवा-अवधि में उन्होंने अनेक विभागों में कार्य किया।

न्यास के समस्त कर्मी सेवानिवृत्त होने वाले अपने तीनों सहयोगियों के अच्छे स्वास्थ्य एवं उनके दीर्घायु होने की कामना करते हैं।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन संचालित स्वायत्त संगठन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत का मुख पत्र है।

इस पत्र के आलेखों में व्यक्त विचारों से न्यास की सहमति का होना आवश्यक नहीं है।

संपादक : **उमा बंसल**
कार्यकारी संपादक : **दीपक कुमार गुप्ता**
संपादकीय सहयोग : **अल्पना भसीन**
उत्पादन अधिकारी : **नरेन्द्र कुमार**

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
(नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया)
नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II
वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070
ई-मेल: office.nbt@nic.in
वेबसाइट : www.nbtindia.gov.in

पाठकों से अनुरोध है कि वे **राष्ट्रीय पुस्तक न्यास संवाद** के बारे में अपने विचार संपादक को लिखें।

राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत की ओर से सतीश कुमार द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा अरावली प्रिन्टर्स एवं पब्लिसर्स प्रा.लि., डब्ल्यू 30, ओखला फेज-II, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, नई दिल्ली-110020 से टाइपसेट एवं मुद्रित और राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070 से प्रकाशित। संपादक : उमा बंसल।

भारत सरकार सेवार्थ

डाक वापसी की दशा में कृपया इस पते पर वापस करें :
नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070